ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-4* July- 2021
Anthology : The Research

वर्तमान हिंदी महिला कथा लेखन और दांपत्य जीवन

Current Hindi Female Fiction Writing and Married Life

Paper Submission: 05/07/2021, Date of Acceptance: 15/07/2021, Date of Publication: 26/07/2021

दलीप कुमार शर्मा
प्राचार्य,
प्रणयराज डिग्री कॉलेज,
बज्जू, बीकानेर, राजस्थान
भारत

सारांश

वर्तमान हिंदी महिला कथा लेखन और दांपत्य जीवन परिवर्तन सृष्टि का शाश्वत नियम है। संपूर्ण प्रकृति परिवर्तनशील है। जगत जीवन भी परिवर्तनशील है एक मौसम के बाद दूसरा मौसम दिन के बन्द रात और रात के बाद सुबह आती है। इसी प्रकार परिवर्तनशील जगत के अंतर्गत समाज भी इससे अछूता नहीं रह सकता। इसलिए समाज की समय के साथ–साथ बदलता रहा है। हां यह तो हो सकता है की सामाजिक जीवन के किसी पक्ष में परिवर्तन गति तेज हो इसी में धीमी परंतु परिवर्तन तो होगा ही इससे सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव विवाह और परिवार की समस्याओं पर पड़ना स्वाभाविक है। साहित्य समाज का दर्पण है जब समाज में परिवर्तन होता है तो साहित्य में भी परिवर्तन होता है। जिस प्रकार भौतिक शरीर की स्थिति और उन्नति बाह्यभूतों पर निर्भर है वैसे ही किसी समाज का बनना और बिगड़ना। यहां के साहित्य पर निर्भर करता है।

हिंदी का आधुनिक काल साहित्यिक विकास की दृष्टि से अनुपम एवं स्वर्ण युग है। इस युग में साहित्य की प्रायः सभी विधाएं जिस त्वरित गति से समर्थ हुई है। वैसी स्मृति हिंदी के पूर्व में भी नहीं देखी गई व्यापकता और परिणाम की दृष्टि से आधुनिक कथा. साहित्य ने एक मंजिल पर की है। आधुनिक काल में हर वर्ग और यौवन. भावनाओं का स्वच्छंद रूप दिखाई पड़ता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी की स्थिति में भी सुधार हुआ। आज के कथाकारों में महिला कथाकारोए लेखिकाओं का सक्रीय के योगदान कम नहीं अपितु अभूतपूर्व योगदान दे रही है। काव्य के क्षेत्र में नारी का ध्यान जीवन की विविधता की ओर गया और उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, उपदेशात्मक, हास्यव्यंग्य प्रधान, अनमेल विवाह, बेमेल विवाह, अनेतिक रूढ़ियां, विधवा विवाह, आदि समस्याओं को निपुणतापूर्वक अंकित किया गया है।

Current Hindi women's story writing and married life change is the eternal law of creation, the whole nature is changing, the world life is also changeable, after one season the second season comes after the closed night of the day and the morning after the night. Similarly, in a changing world, society cannot remain untouched by it. So the society has been changing with time. Yes, it is possible that the pace of change in some aspect of social life will be fast, but change will happen but it is natural for social change to affect the problems of marriage and family. Literature is the mirror of the society, when there is a change in the society, there is a change in the literature too. Just as the condition and progress of the physical body is dependent on external beings, so also the making and deteriorating of a society. Depends on the literature here. The modern period of Hindi is a unique and golden age from the point of view of literary development. The speed with which almost all the genres of literature have been enabled in this era. Such a memory was not seen even in the past in Hindi, in terms of breadth and result, the modern story. Literature has done on one floor. Every class and youth in the modern period. Feelings are clearly visible. The condition of women also improved after independence. In today's storytellers, the contribution of women writers and writers is not less, but they are making an unprecedented contribution. In the field of poetry, women's attention has turned towards the diversity of life and they have skillfully marked the problems of political, social, historical, psychological, didactic, humorous, mismatched marriages, mismatched marriages, many customs, widow marriages, etc.

मुख्य शब्द :शाश्वत, सृष्टि, जगत, पंचभूतों, दर्पण व्यापकता, त्वरित, स्वच्छंद, सक्रिय, उपदेशात्मक जन्मदात्री, विविधता, अनैतिक, रुढियो, अंतर्गत, अनमेल, अभूतपूर्व।.

Eternal, creation, world, five elements, mirror broadness, quick, open, active, didactic, birth- born, diverse, immoral, within, unmatched, unprecedented

प्रस्तावना

दांपत्य जीवन सामाजिक संगठन का मूल आधार है और व्यक्ति के जीवन में भी उसी पर की अत्यंत महत्वपुर्ण भूमिका है। मानव जीवन में अपनी विशिष्ट स्थिति के कारण हर प्रकार की कलात्मक अभिव्यंजना विशेषता साहित्यिक अभिव्यंजना में दांपत्य जीवन का विशद चित्रण किया गया है। प्राचीन और मध्यकाल में दांपत्य जीवन संबंधी मर्यादाओ तथा मान्यताओं में कोई भी विशेष उथल–पुथल दिखाई नहीं देती परंतु दांपत्य जीवन संबंधी दृष्टिकोण और मान्यताओं में क्रांतिकारी परिवर्तन के संकेत भी सामने हैं।

आधुनिक काल से पहले साहित्य सर्जना के क्षेत्र में पुरुषों का बोलबाला था । परंतु आधुनिक काल में सभी प्रकार की कलात्मक अभिव्यंजना में स्त्रियों का योगदान निरंतर बढ़ता रहा है। कथा साहित्य लेखन में स्त्रियों का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। उनमें से प्राय सभी ने दांपत्य जीवन की समस्याओं को उजागर करने की और विशेष ध्यान दिया है। तथा दांपत्य जीवन संबंधी मान्यताओं के नए उन्मेष निमित्त भूमिका तैयार करने में गहरी रुचि दिखाई जिसमें ब्रह्मण समाज, आर्य समाज, इंडियन नेशनल कांग्रेस के सामाजिक एवं राष्ट्रीय आंदोलनों ने भारतीय नारी के व्यक्तित्व में परिवर्तन कर दिया था। 1922.23 में 'चांदश् और 'माधुरीश् पत्रिकाओं का प्रकाशन विशेषता, से नारी के साहित्य और बौद्धिक विकास का व्यवहारिक और क्रियात्मक बनाने के उद्देश्य से किया गया। परंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उनका मन विद्रोह कर उठा और अपना पथ स्वयं बनाने के लिए चरण बढ़ा दिए इन लेखिकाओं में कृष्णा सोवती का 'डार से बिछुड़ी', 'सूरजमुखी अंधेरे केष्' एक दिनश् कहानी में अंतरजातीय विवाह, मेल विवाह, बहुपति विवाह, और सेक्स का खुला चित्रण देखने को मिलता है।

मन्नू भंडारी की गीत का चुंबन, जीती बाजी की हार, दीवार, बच्चे और बरसात, नकली हीरे, नई नौकरी, चश्मे कहानियों में प्रेम चित्रण में रोमानी पन भावुकता कर प्रेम की परिपक्वता और भावुकता के स्थान पर पश्चिमी ढंग का यथार्थ पर रोमांश दर्शाया गया है। इसी प्रकार शशि प्रभा शास्त्री की रचनाओं में कर्करेखा, परछाइयों के पीछे, विरान रास्ते और झरना सीढ़ियां उपन्यास में विवाह के विरुद्ध अपने विचारों को दर्शाया है। इसी प्रकार मेहरून्निसा, परवेन, इंदुबाली, उषा प्रियम्वदा, ममता कालिया, शिवानी, धनुकांता, उषापुरी, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतना, ममता कालिया, महादेवी वर्मा, मृणाल पांडे अपने लेखन में दांपत्य जीवन में यथार्थ का महत्व देती हैं। आदर्श को नहीं मानती और न ही विवाह को आवश्यक मानती है।

विवाह में कदापि जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए क्योंकि ऐसे ही वह कभी सफल नहीं हो पाते जब तक लड़का और लड़की दोनों के मन से विवाह के लिए तैयार नहीं हो तब तक शादी नहीं करनी चाहिए मालती जोशी ने एक कहानी 'एक जंगल आदमी काष् कहानी मे भारतीय तयशुदा विवाह पद्धति पर एक व्यंग्य करते हुए कहा है श् बस खाता.पीता घर देखा और सोवडी लड़की मे आदतो का पता लगाया रुचियो के बारे में पूछा। जबकि सुखी दांपत्य जीवन दारोमदार इनके सम्ंजाल पर होता है।'

पारिवारिक जीवन में परिवार मे कुंठा, तलाक टुटने व बिखरने व बढ़ते जा रहे हैं शिवानी, मनु भंडारी, मेहरून्निसा, आदि ने सयुक्त परिवार की उपयोगिता पर बल दिया। जबकि शशिप्रभा, मृदुला गर्ग, कृष्णा अग्निहोत्री आदि ने एकाकी परिवार का चित्रण किया है।

दांपत्य जीवन की मूलभूत आवश्यकता है पारस्परिक प्रेम भावनाओं और विचारों का लेनदेन हृदय का हृदय से मेल सिर्फ विवाहित जीवन की ही बात क्यों करें कोई भी रिश्ता आपसी समझौतों के बिना नहीं टिक सकता और दांपत्य जीवन तो सबसे बड़ा संबंध है

अध्ययन का उद्देश्य

स्वतंत्रता के बाद महिला कथा लेखन में नारी पुरुष संबंधों के नए आयामों का मूल्यांकन, सामाजिक जीवन में नारी के महत्वए अधिकार तथा परिवार के बारे में विश्लेषण कर विवाह में दांपत्य जीवन संबंधी समस्याओं को और कलाकारों के कथा साहित्य में दांपत्य जीवन की आधुनिक जटिलताए नारी की सामाजिक, नारी पुरुषों के संबंधों, उनकी कुंठाओं वर्जनाओको समझने और विश्लेषित करने का प्रयास किया है ।

1 दंपति जीवन के सैद्धांतिक पक्ष प्रस्तुत करना
2 कथा लेखन में आये दांपत्य जीवन संबंधी मान्यताओं ओर उनकी कृतियों का आंकलन करना
3 महिला लेखिकाओं द्वारा वर्तमान कथा लेखन में दांपत्य जीवन में योगदान

निष्कर्ष

वर्तमान तथा लेखिकाओ की कृतियों का अध्ययन करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं की नारी कोरी भावुक मानकर उसकी अद्भबुद्ध मती की उपेक्षा नहीं की जा सकती। मार्क्सवाद से प्रभावित होकर उसने पूंजीपतियों के अत्याचार के विरुध आवाज उठाई फ्रायड के प्रभाव को ग्रहण करके मनोविज्ञानिक कहानियां भी लिखी और सामाजिक जीवन की अन्याय निष्ठा पर कटु व्यंग्य भी किए हैं। दापत्य जीवन की सभी दिशाओं को चाहे वह भारतीय जीवन हो या पाश्चात्य या फिर उभयपक्षीय दापत्य जीवन या सुखमय भ्रमण किया है। और महिला होने के नाते स्त्री वर्ग की कठिनाइयों को सहज स्वाभाविक रूप से पकड़ा है और निःसंकोच उनकी अभिव्यक्ति भी की है जो भी हो जीवन के मधु. कटु, अमृत–विष दोनों ही रूपों का यथार्थ प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 *भारत में विवाह और परिवार . डॉ0 कापड़िया*
2 *आधुनिक उपन्यासों में प्रेम की परिकल्पना दृ डॉ0 विजय मोहन*
3 *मित्रो मरजानी . कृष्णा सोबती*
4 *सीढिया शशिप्रभा*
5 *टूटा हुआ इंद्रधनुष . मंजुल भगत*
6 *एक जंगल आदमियों का . मालती जोशी*
7 *हिंदी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण दृ डॉ0 विमल सहस्त्रबुद्धे*
8 *महिला कलाकारो की रचनाओं में प्रेम का स्वरूप . सरिता कुमार*
9 *महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ दृ डॉ0 शील प्रभा*
10 *लव मेरिज ओर सेक्स . डॉ0 प्रमिला कपूर*